

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

(प्रथम सप्ताह) स्वमान - मैं डबल ताजधारी बेफिक्र बादशाह आत्मा हूँ।

बेफिक्र बादशाह की निशानी:- उनका मस्तक लाइट से चमकता है और बेफिक्र बादशाह हो तो डबल ताजधारी भी हो। तो सभी अपने को बेफिक्र बादशाह अनुभव करते हो? अगर डबल ताज नहीं अर्थात् बेफिकर नहीं तो माथे पर क्या आ जाता है? किचड़े का टोकरा। तो क्या अच्छा लगता है? ताज या टोकरा? द्वापर से राजे तो अनेक बनते हैं लेकिन डबल ताज कल्प में सिर्फ आप बच्चों को प्राप्त होता है। **बेफिक्र बादशाह बनने की सहज विधि :-** मेरे को तरे में बदल दो। कितना सहज है मेरा और तेरा। ते और मे, इतना ही फर्क है। तो सभी ने मेरे को तरे में बदल दिया है? कभी तरे को मेरा तो नहीं कर देते हो? अगर अभी भी थोड़ा बहुत रह गया है तो फिकर देकर, फखुर ले लो। **अमृतवेले से लेके रात तक ब्रह्माबाप को फॉलो करो:-** दिन प्रतिदिन विश्व में भय बढ़ने वाला है लेकिन आप सभी बाप के बच्चे बेफिक्र बादशाह बन औरों को भी फिकर से दूर करेंगे। इसके लिए सहज साधन है अमृतवेले से लेके

रात तक ब्रह्माबाप को फॉलो करो। क्योंकि ब्रह्माबाप साकार तन में हर जिम्मेवारी होते बेफिक्र बादशाह रहा। अन्त तक उन्हीं की सूरत में बेफिक्र के चिन्ह दिखाई दिये। अन्त तक भी कोई आधार बिना लास्ट क्लास कराया तो ऐसे आप सभी भी बेफिक्र बादशाह हो? **मन सदा बेफिक्र हो:-** बापदादा सभी बच्चों को ब्रह्माबाप समान देखना चाहते हैं तो चेक करना, चाहे शरीर कैसा भी हो लेकिन मन सदा बेफिक्र बादशाह हो। तो नोट करना, सुबह उठते ही चेक करो, सबकॉन्सेस में भी कोई फिकर तो नहीं है? **आपका टाइटल बेफिक्र बादशाह:-** कल्प में सिवाए आप बच्चों के डबलताजधारी बेफिक्र बादशाह कोई नहीं बना है। आपके चित्रों में सदा डबल ताज है। द्वापर में कई राजे बनें लेकिन डबल ताजधारी कोई नहीं बना। तो अपना टाइटल बेफिक्र बादशाह सदा याद रखना। **पेपर अनुभवी बनाने का साधन है:-** अमृतवेले से लेकर स्मृति में रखना कि मैं कौन? बेफिक्र बादशाह। कैसे भी शरीर का हिसाब

शरीर जाने लेकिन मन सदा बेफिक्र बादशाह। कैसा भी पेपर हो लेकिन पेपर अनुभवी बानके आगे बढ़ाने वाला है इसलिए पेपर से डरना नहीं। तो बापदादा यही चाहते हैं कि सदा हर बच्चा ब्रह्माबाप समान मास्टर ब्रह्मा बनें। **फिकर नहीं तो बीमारी भी नहीं:-** ऐसी दवाई निकालो जो कोई भी थोड़ा सा तन से या मन से नाखुश हो तो दवाई को याद करते ही खुश हो जाए। वह दवाई है मेरा बाबा। तो सभी के मन में मेरा बाबा बिठाओ तो यह दवाई हो जायेगी। फिकर नहीं तो बीमारी भी नहीं। **सदा खुश रहो:-** कैसा भी समय आवे लेकिन ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी हर समय सदा खुश रहे। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी की खुशी गायब हो नहीं सकती। छोटी-बड़ी बातें तो आनी ही है लेकिन आपके लिए कोई बड़ी बात नहीं, कल्प-कल्प देखा व पास किया है। **सदा एक बात याद रखना-हमें विजयी बनना ही है।** चाहे कोई सरकारमस्तांशो हो, लेकिन हमारा नाम विजयी है। हमारी विजय हुई पडी है।



सातारा -कूपर कालोनी। मेजर राजेश हंकारे को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कांचन।



मोतिहारी। चम्पारण विकास मोर्चा के केन्द्रीय अध्यक्ष राय सुंदरदेव शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.रानी।



बोकारो। सांसद पशुपतिनाथ सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कुसुम।

(द्वितीय सप्ताह)

अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित होते रहो -
1. मस्तक में - चमकता हुआ सितारा। 2. मुख में - वाणी की चमक। 3. होठों में - मुस्कराहट। 4. दिल में - दिलाराम बाप की लवलीनमूर्त की झलक। 5. हाथों में - ज्ञान के खजानों की चमक। 6. पांव में - कदम में पदम की झलक। सोचो, इतना बड़ा भाग्य कैसे बना? स्वयं भाग्यविधाता बाप ने भाग्य बनाया। तो रोज अमृतवेले अपने इस श्रेष्ठ भाग्य को देखते रहो।

भाग्यवान का चेहरा सदा खुशकिस्मत और खुशानुमा होगा :- बापदादा हर बच्चे के भाग्य को देख हर्षित होते रहते हैं। इसलिए गायन है अगर भाग्य देखना है तो परमात्म बच्चों का भाग्य देखो। आप सबको भी अपने भाग्य को देख खुशी होती है। दिल से क्या निकलता है वह मेरा भाग्य। अपने भाग्य को देख अन्य आत्माओं के लिए उमंग आता है कि इन एक एक आत्मा का भी भाग्य उज्ज्वल हो जाए। भाग्यवान का चेहरा सदा खुशकिस्मत और खुशानुमा होगा। तो हर एक अपने को चेक करो कि अमृतवेले से लेकर रात

स्वमान - सदा खुशकिस्मत व खुशानुमा आत्मा हूँ

तक खुशामिजाज और खुशकिस्मत रहे? **सदा खुशी में उडते रहो, रुहानियत में मुस्कराते रहो:-** कई बच्चे कहते हैं शक्ति स्वरूप या खुशामिजाज रहते तो हैं लेकिन कभी कभी। यह कभी कभी का शब्द बापदादा को पसन्द नहीं। सदा बाप समान दिखाई दे। बाप चाहते हैं हर बच्चा सदा खुशी में उडता रहे और रुहानियत में मुस्कराता रहे। बापदादा ने कई बार कहा है कि खुशी कब गवाना नहीं। क्योंकि खुशी जैसी करामात और कोई भी नहीं है। जानते हो ना जो भी वस्तु होती है वह देने से कम होती है, लेकिन खुशी किसको भी दो तो कम होगी या बढ़ेगी? तो ऐसी खुशी जो सदा बढती रहती है उसको कभी नहीं छोडना। आपका चेहरा कोई भी देखे तो सदा खुशामिजाज दिखाई दे। **भगवान और भाग्य की स्मृति से सदा हर्षित रहो:-** कलियुग का अर्थ क्या है? कलियुग क्यों कहते हो? कलह क्लेश होगा तब तो कलियुग कहते हो। लेकिन उसमें हमें क्या करना है? परिवर्तन। बातों में नहीं आना लेकिन बातों को

परिवर्तन कर सेवा के लिए सदा एवररेडी रहना। सदा अपने भाग्य को याद रखना। भगवान और भाग्य, इससे सदा हर्षित रहेंगे, और आपके हर्षित चेहरे को देख और भी हर्षित हो जायेंगे। तो आज बापदादा भी बच्चों को यही याद दिलाते हैं कि सदा हर्षित रहो और हर्षित बनाओ। **तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् हर सब्जेक्ट में सन्तुष्ट और खुश :-** बापदादा हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी देखना चाहते हैं। तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् हर सब्जेक्ट में अपने पुरुषार्थ से सन्तुष्ट हो। और बापदादा भी हर बच्चे से यही चाहते हैं कि अभी समय अनुसार हर बच्चे के चेहरे पर शक्तियां और खुशी नजर आनी चाहिए। क्योंकि दिन प्रतिदिन दुनिया में दुख अशान्ति बढ़नी ही है। लेकिन ऐसे समय पर आपका खुशानुमा दिव्यगुण वाला चेहरा देख उन्हीं को थोडे समय के लिए भी खुशी की अनुभूति हो। हर एक बच्चे के चेहरे से ईश्वरीय स्नेह, ईश्वरीय प्यार, हिम्मत बढ़ाने का प्यार और खुश रहने का अनुभव हो।



मांडवी। विधायक परशु भाई को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.गायत्री एवं ब्र.कु.दिना।



दिल्ली-समयपुर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक देवेन्द्र यादव, ब्र.कु.कुसुम तथा ब्र.कु.रजनी।



वर्धा। ब्र.कु.माधुरी को मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित करते हुए लायन्स क्लब के अध्यक्ष गणराज जी व लायनेस अध्यक्ष श्रीमती जाधव।



मिर्जापुर। उप महापौर मोहन मिथवावकर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कविता।

मौन की...

-पेज 5 का शेष

की अनुभूति होती है। लेकिन अंतर्मन की गहराइयों में उतरने वाले सदा ही सुखी और सम्पन्न होते हैं। उदाहरणस्वरूप कोई व्यक्ति यदि समुद्र में ऊपर ही तैरता रहे, तो वहाँ तो उसे लहरों रूपी थपेड़े ही मिलेंगे लेकिन सागर की गहराइयों में रमण करने वालों को हीरे-मोती प्राप्त होते हैं। अतः मौन वह साधना है जो स्व-दर्शन कराती है तथा मन को क्षणभंगुर सुख के बादलों से निकाल कर सदाकालिक सुख रूपी सूर्य के दर्शन

कराती है। तो हे योगियों! अब एक दो दिन का मौन रखने से बात नहीं बनेगी अपितु समय की आवश्यकता है कि जीवन ही मौन बन जाये। महापुरुषों की सर्वप्रथम विशेषता मौन ही बतायी जाती है। सम्भव है कि पहले-पहले वाणी पर नियंत्रण करना थोड़ा कठिन लगे लेकिन बार-बार का अभ्यास हमें मौन की गहराइयों में ले जायेगा। मौन हमें संसार की क्षणभंगुर वस्तुओं से दूर करता है तथा परमात्मा के निकट ले जाता है। मौन ही साधकों का प्रथम और अन्तिम सोपान है।



व्यावरा। एडीशनल एस.पी.। रोकेश कुमार सगर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी।